

## गॉइस प्लान फॉर अस...

आज मनुष्य चन्द्रमा से मंगल तक पहुँच गया है। साइंस की इस तरक्की से कई सुख सुविधा के साधन भी बनाये गये। पर आज सारी भौतिक तरक्कियों को देखकर भी हमें एक चीज़ की कमी खलती है, वो है शांति और आनंद। वो कहीं भौतिक तरक्की और बाज़ार से नहीं मिल पाई। सब सुविधायें प्राप्त करने के बावजूद कहीं न कहीं मनुष्य के भीतर ये कमी खलती रही कि काश! कहीं दो पल शांति और मन को चैन मिल जाए। मनुष्य का प्लान भौतिक तत्वों से शांति और खुशी प्राप्त करने का प्रतीत होता है। परंतु वह न मिल पाने पर वे अपने आप को मायूस ही अनुभव करता है। अब इन चीज़ों को अगर मनुष्य ही कर लेता तब भला भगवान की कोई आवश्यकता रह जाती!

भगवान जब सारे संसार को देखता है, तो मनुष्य ने बौद्धिक स्तर को तो बहुत विकसित कर लिया, परंतु साथ ही अति भौतिकता के कारण दिमाग में बेचैनी पैदा कर बैठा। ऐसे में जब मनुष्य ऐसी अवस्था से गुजरता है, तब उसे भगवान की याद आती है और कहते सुना जाता है, हे प्रभु! आओ हमें सुख शांति और आनंद दो। भगवान के प्लान में सिर्फ दो ही चीज़ें आती हैं, एक... मानव के मस्तिष्क को पॉज़िटिव रूप से क्रियेटिव बना देना और दूसरा, उसकी वृत्ति या एटीट्यूड को परिवर्तन करना। मनुष्य अगर दुःखी है तो मन के कारण, अगर सुखी है तब भी मन के कारण। कहते हैं ना, मन से सुख और मन से दुःख। तो मन की ऊर्जा को सही दिशा में, सही तरीके से श्रेष्ठता की ओर मोड़ना, ये सिर्फ परमात्मा ही कर सकते हैं। अगर हम ये कर लेते तो भगवान की आवश्यकता ही न रहती।

जाने अनजाने हमारे द्वारा हुए कर्मों का प्रभाव हमारी आत्मा को प्रभावित करता है, तो उसे कैसे बदला जाए, ये हमें समझना है। क्योंकि आज हम ये समझ भी नहीं पाते कि सही क्या है और गलत क्या। आज अगर हम समाज के परिदृश्य में देखें तो... मान लीजिए कोई भिखारी आपसे कुछ मांग रहा है, आप उसे अपने पर्स से रुपया निकालकर देते हैं। अच्छी बात है, परंतु क्या वो भिखारी उस पैसे का उपयोग केवल भूख मिटाने के लिए करता है, यह सुनिश्चित है? नहीं ना। क्योंकि उसने जाकर यदि उस पैसे से शराब पी लिया, तो क्या ये आपके दिये पैसे का सही इस्तेमाल हुआ? नहीं ना। आपके सहायता करने का उद्देश्य तो यही था कि किसी के पेट की भूख तृप्त हो जाए। परंतु आदतन वो भिखारी उसका इस्तेमाल और ही उसके आदत को बिगाड़ने में कर रहा है। इससे उसकी खराब आदत और ही परिपक्व होती जा रही है, उसका कारण हमारा दिया हुआ पैसा बन रहा है। तो यहाँ हमें ये जानना ज़रूरी हो जाता है कि हमारे द्वारा किये हुए कर्म का परिणाम क्या निकल रहा है। श्रेष्ठ कर्म या पुण्य कर्म कैसे हों तथा उस आत्मा के जीवन में बदलाव किस तरीके से हो ताकि वो जीवन में सुख शांति अनुभव कर सके और अपना जीवन खुशी से जी सके। ये कार्य सिवाय परमात्मा के और कोई कर ही नहीं सकता। इसी वजह से इन दो कार्यों जो कि मनुष्य के वश में नहीं है, मन को सकारात्मक ऊर्जा से पुष्ट करना तथा स्वयं और दूसरों के प्रति शुभ भाव या शुभ कामना वाले विचार ताउम्र बनाये रखना, इसका तौर-तरीका परमात्मा के सिवाय कोई बता पाने में असमर्थ है। मनुष्य को इस मैकनिज़म से प्रशिक्षित करने का काम परमात्मा ही करते हैं, कोई मनुष्य इसे नहीं कर सकता। जैसे कि एक देश का सुशिक्षित और देश के प्रति समर्पित नागरिक चाहे कहीं पर भी होगा, वो अपने देश के प्रति अच्छा और उन्नत ही सोचेगा। ना वो गंदगी करेगा, ना किसी से प्रभावित होगा, बस उसके जहन में होगा कि मेरा देश पहले। ऐसे ही जैसे कोई सिपाही बोर्डर पर सुरक्षा करता है, देश के लिए मर मिटता है, देश की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करता, ठीक इसी तरह जब परमात्मा मन मस्तिष्क को ही सही, श्रेष्ठ, उन्नत बना देते हैं तो उस ऊर्जा से कहीं पर भी रहकर कोई मनुष्य निकृष्ट कर्म करेगा ही नहीं। वह स्वयं भी शांत रहेगा और उसके द्वारा जो कर्म होगा वो भी दूसरों की शांति के लिए ही होगा। इस तरह से मन को प्रशिक्षित करने के लिए ही परमात्मा का अवतरण होता है, और हम कहते भी हैं ना कि त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु...। तो कभी तो उन्होंने हमारे मन को उन्नत करने का कार्य किया ही होगा, तभी तो हम उसे पुकारते हैं। जहाँ हर मनुष्य के मन मस्तिष्क में शांति, श्रेष्ठ भावना व खुशी होगी वहाँ सुस्वास्थ्य तो होगा ही ना। और इससे सारे विश्व में ही सुख शांति बनी रहेगी।



- डॉ. कु. गंगाधर

## ज़िम्मेदारियां सम्भालते, पीसफुल रहो तो दुआयें मिलती रहेंगी

परमपिता परमात्मा कहते... बच्चे तुम शान्ति स्थापक हो इसलिए तुम्हें शान्त रहना है। जो पीसफुल रहता है वही नॉलेजफुल रहता है, वही ब्लिसफुल रहता है। जो काम परमात्मा ने दिया भले स्थूल में ईश्वरीय सेवा है, ज़िम्मेवारी है। लेकिन उसके साथ-साथ पीसफुल हैं तो जैसे नॉलेजफुल हैं। उसी आधार से ब्लैसिंग्स मिलती हैं। एक तरफ बाबा की, दूसरी तरफ सर्व ब्राह्मण आत्माओं की, जिस भी आत्मा के सम्पर्क में आओ तो दुआएं मिलती हैं। परमात्मा ने सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज दी है। जो भी काम हम करते हैं, त्रिकालदर्शी बनकर करते हैं। कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान यूज करने के लिए

त्रिकालदर्शी का ज्ञान ज़रूरी है। पास्ट की बातों को बुद्धि में रखकर अच्छा काम नहीं कर सकते। यह पुराना शरीर, जड़जड़ीभूत होते भी संगम पर हमारे बहुत काम का है। इस अंतिम जन्म के अन्त की घड़ी में भी बहुत कमाई होने वाली है। सतयुग में अच्छा शरीर होते हुए भी आत्मा ऐसा काम नहीं करेगी। भविष्य के लिए पुराने शरीर में यह आत्मा अच्छा काम कर रही है। इसलिए इस अंतिम जन्म की महिमा अपरम्पार है। जैसे ब्रह्माबाबा को शिवबाबा ने बताया कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते, मैं तुम्हें आकर बताता हूँ। बाबा ने हम बच्चों को अपना बनाने के लिए

ब्रह्मा तन में प्रवेश किया। हमको याद दिलाया कि तुम्हारा भी यह अंतिम जन्म है। अन्त याद होगा तो आदि भी याद होगी। आदि याद होगी तो मध्य भी याद होगा। भक्ति मार्ग में बहलने बहलाने के लिए टाईम पास हुआ। जब भक्त थे तो भी खुशी थी, लेकिन अब की खुशी न्यारी है। अब की खुशी में बहुत ऊँचा है। उस खुशी में भविष्य ऊँचा नहीं था। अभी खुशी है कि हमारी चढ़ती कला है। हमारा भविष्य पद ऊँचा हो रहा है। इसलिए सदैव पुरुषार्थ

में जुटे रहना चाहिए। कभी भी पर्सनल पुरुषार्थ में फर्क ना पड़े। समस्याएं तो दिन प्रतिदिन ज़ोर से आयेंगी ही। जितना आगे बढ़ेंगे, समस्याएं कम नहीं होंगी, लेकिन हम पुरुषार्थ में जुटे होंगे तो उनका सामना कर सकेंगे। बाबा ने बहुत समय से सिखाया है, समस्याओं का समाधान कैसे करना चाहिए। बाबा ने कहा कि बच्चे मनमनाभव रहो। बेफिक्र बादशाह रहने के लिए चार पिल्लर मज़बूत हों। समय सफल होता रहे। जैसे बाबा को देख खुश होते हैं ऐसे परिवार को और स्वयं को देख कर खुश हों। खुशी की मज़बूती बेफिक्र बना देती है। दुःख-हर्ता बाबा हमें मिला है तो कभी भी दुःख इमर्ज न हो।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

## सतयुगी राजधानी का दिव्य दर्शन

स्वर्ग में किसी का भी अंग लम्बा चौड़ा, टेढ़ा-मेढ़ा नहीं होता। आजकल की फैशन वहाँ नहीं है। नैचुरल ब्युटी है, वहाँ देवताओं के शरीर विकार से पैदा नहीं होते हैं, वो तो योगबल से होते हैं। आत्मा सम्पूर्ण तो शरीर भी सम्पूर्ण मिलेगा। तन सम्पूर्ण है तो मन में भी कोई अशांति नहीं है। खुशी का आधार प्राप्ति है। वहाँ कोई उठाने नहीं आता है, आपेही आँखें खुल जाती हैं। थकावट से बैठे रहेंगे! पाँच मिनट बैठकर उठते हैं। बेफिक्र है ही नहीं। क्लास में जाना है, दफ्तर में जाना है - ऐसी ज़िम्मेवारी वहाँ नहीं है। इसलिए वहाँ रेस्ट की लाइफ है, कोई दौड़ नहीं है! मन एकदम शीतल और शरीर भी एकदम शीतल और शरीर भी एकदम आरामसे कार्य करेगा यहाँ टाईम पर कार्य करने की ज़िम्मेवारी है, लेकिन वहाँ स्वतः ही टाईम पर कार्य होगा। वहाँ ब्रह्ममुहूर्त में उठते ज़रूर हैं। के जो पत्ते हैं वो ऐसे हिलते हैं जिससे पत्तों की आवाज़ बहुत मीठी निकलती है। पंछी भी 'काँ काँ' आवाज नहीं करेंगे। वो बोलते ऐसे हैं जैसे गीत गाते हैं और जैसे साज़ बजाते हैं। ऐसा मीठा लगता है वो आवाज़, इतना प्यारा लगता है कि समय होते ही आपेही आँखें खुल जाती हैं। जैसे ही आँखें खुलती हैं, तो यहाँ के मुआफिक चार बज गये हैं, अब उठो भागो ऐसे नहीं है। ठीक समय पर आराम से उठकर बड़े प्यार से बैठे रहेंगे! पाँच मिनट बैठकर उठते हैं। बेफिक्र है ही नहीं। क्लास में जाना है, दफ्तर में जाना है - ऐसी ज़िम्मेवारी वहाँ नहीं है। इसलिए वहाँ रेस्ट की लाइफ है, कोई दौड़ नहीं है! मन एकदम शीतल और शरीर भी एकदम आरामसे कार्य करेगा यहाँ टाईम पर कार्य करने की ज़िम्मेवारी है, लेकिन वहाँ स्वतः ही टाईम पर कार्य होगा। वहाँ ब्रह्ममुहूर्त में उठते ज़रूर हैं। के जो पत्ते हैं वो ऐसे हिलते हैं जिससे पत्तों की आवाज़ बहुत मीठी निकलती है।

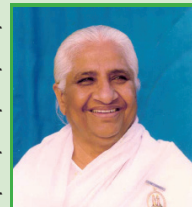


दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

## हमें अब ड्रामा को जीरो पर लाना है

परमात्मा सदा यही कहते हैं कि अपने को इतना देही अभिमानी बनाना है, दूसरों को साइलेन्स की शक्ति देना है जो ऐसे लगे कि मैं आत्मा अलग हूँ, यह शरीर इससे अलग है, मैं इससे अलग हो कार्य कर रही हूँ। आत्मा को प्योर डायमण्ड बनना है। यदि कोई कहता कि यह तो मेरा संस्कार है, तो यह भी प्योर पेपर पर, प्योर डायमण्ड पर दाग है। दाग को मिटाना है। कोई दाग नहीं रहे। डायमण्ड में दाग आया तो डायमण्ड की वैल्यू चली जाती है। तो ज्ञान की बातें बुद्धि में बहुत हैं। सेवा के भी प्लैन सभी बहुत अच्छे बनाते हैं, उमंग उत्साह के पंख भी लगाते हैं, खुशियों में भी रहते, बाबा से प्यार भी बहुत रखते, प्योरिटी का भी पुरुषार्थ करते, बाबा के समान बनने का भी लक्ष्य रखते, लेकिन उस लक्षण में भी आना है और उससे भी ऊँचा जाना है। बाबा

दो। इसलिए कहते जितना-जितना योग करो, भट्टी करो, उतना ये सब मिट जायें और कम्पलीट बनें। परमात्मा भी कहते अलबेले नहीं अलर्ट रहो। तो यह अलर्ट रहने की साधना है। यह साधना सबको अपने सच्चे दिल से, रुचि से करनी है, तब हमारी अन्त में तपस्या सफल हो जायेगी। वास्तव में हम सब राजयोगी हैं। लेकिन योग का अंतिम चरण लाना है। इतना अपने को योगी बनाना है जो लगे कि योग भी हमारा कितना सुन्दर प्यारा सब्जेक्ट है। न तेरा, न मेरा, न ये, न वो कुछ भी नहीं हो। ऐसा लगे सचमुच हम परमधाम घर में हैं। अब हमें जाना ही है यह आँखों में बसना चाहिए। यह याद रहे। मेरा वर्तमान यह पुरुषार्थ है, लक्ष्य है, इसी पर पूरा ध्यान है। हम सबको वर्तमान समय यह स्थिति बिल्कुल पावरफुल बनानी है। इसमें सब शक्तियां आ जायेंगी। रूहरिहान करो, प्वाइन्ट्स निकालो, यह अच्छी बात है लेकिन प्वाइन्ट रूप बनने का बहुत ध्यान रखना है। तब ही स्वयं को स्वयं से संतुष्टता होती है। यह है योग की सिद्धि। इसका नाम है राजयोग। स्वयं हर एक दिल से यह कहे कि मैं कितना साइलेन्स के टावर पर रहता हूँ। जहाँ कुछ नहीं है। ऐसी भट्टियाँ, ऐसी तपस्या, ऐसा पुरुषार्थ हर एक अपने-अपने सेन्टर पर, घर में स्व उन्नति के लिए करें।



दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका